डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

हिंदी दिवस के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी एवं हिंदी सप्ताह का शुभारंभ

नई दिल्ली। 14 सितंबर 2021; साहित्य अकादेमी में आज 'हिंदी दिवस' के अवसर पर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया। इस पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात लेखक एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्य डॉ. ज्ञानेश्वर मुळे ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. ज्ञानेश्वर मुळे का संक्षेप में परिचय देते हुए कहा कि डॉ. मुळे भारतीय राजनयिक हैं तथा मराठी, अंग्रेज़ी और हिंदी के प्रख्यात लेखक एवं स्तंभकार हैं। डॉ. ज्ञानेश्वर मुळे ने 15 से भी अधिक पुस्तकों का लेखन किया। उनकी पुस्तकें उर्दू, कन्नड, हिंदी आदि विभिन्न भाषाओं में अनूदित हुई हैं। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं – *नोकरशाईचे रंग, ग्यानबाची मेरब, स्वताहातील अवकाश, रशिया–नव्या दिशांचे आमंत्रणा, माणुस आणि मुक्काम, दूर राहिला गाव, माती पंख आणि आकाश, जोनाकी, ज्ञानेश्वर मुळे की कविताएँ : प्रतिनिधि संकलन, अंदर एक आसमान, मन के खलिहानों में, शांति की अफ़वाहें, सुबह है कि होती नहीं, ऋतु उग रही है, ए सीरियन* जर्नी आदि। वे साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य भी रह चुके हैं। उन्होंने पुणे में डिप्टी कलेक्टर के रूप में अपने कार्य जीवन की शुरुआत की तथा उसके पश्चात् वे 1983 से भारतीय विदेश सेवा के लिए चयनित हुए। वे विभिन्न देशों में स्थित भारतीय दूतावासों में निदेशक, सचिव, हाई कमिश्नर, अवर सचिव जैसे अनेक उच्च पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। अभी वे विदेश मंत्रालय में सचिव के पद पर कार्यरत हैं।

इसके पश्चात् अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अंगवस्त्रम तथा पुस्तकें भेंट कर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. ज्ञानेश्वर मुळे का स्वागत किया तथा डॉ. मुळे को उद्घाटन व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया। डॉ. मुळे ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि हमारी तीन अकादेमियाँ भारत की रत्न हैं। यह हमारी संस्कृति की परंपरा को आगे बढ़ाने वाली अहम् कड़ियाँ हैं। पुस्तकें ही दूरियों को समाप्त कर सकती हैं। भारतीय उपखंड में पचास प्रतिशत भाषाएँ बोली जाती हैं, जो शनैः–शनैः कम होती जा रही हैं। हमें इन्हें बचाने का प्रयास करना होगा। दुनिया के लिए हमारी विशेषता, विविधता में निहित है। हमें भाषा को सँजोना होगा। हिंद की भाषा हिंदी है। डॉ. मुळे ने कहा कि जिस देश की भाषा नहीं है, समझो उसकी जिव्हा नहीं है। उन्होंने सभी का आह्वान किया कि आप भारत की समस्त भाषाओं से प्रेम करें। उन्होंने कहा कि मेरे लिए यह संस्था मंदिर के समान है। उन्होंने सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी। उद्घाटन वक्तव्य के बाद मुख्य अतिथि डॉ. ज्ञानेश्वर मुळे ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

अंत में, अकादेमी के संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

के. श्रीनिवासराव